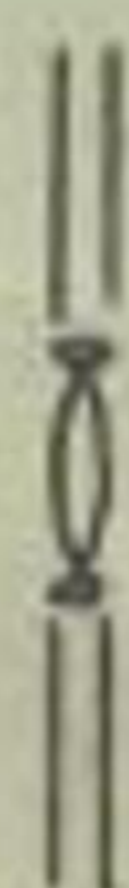


# कांप्युटरायज्ञेन

( एक प्रकट चिंतन )



श्री. दत्तोपंत ठेंगडी



भारतीय श्रम शोध मंडल

बम्बई के 'मुंबई मज़दूर संघ' द्वारा २३ जुलाई १९८४ के दिन भारतीय मज़दूर संघका 'स्थापना दिवस' मनाया गया।

इस अवसरपर बम्बई स्थित के. सी. कॉलेज हॉल में कार्यकर्ताओंका एक विशाल संमेलन संपन्न हुआ।

इस संमेलन में मार्गदर्शन करते हुए मा. दत्तोपंत ठेंगडीने Computerisation के विषयपर व्यक्त किया हुआ प्रकट चिंतन इस पुस्तिका के द्वारा प्रकाशित हो रहा है।

मा. दत्तोपंतजी की अनुमति के लिए हम उनके आभारी हैं।

— भारतीय श्रम शोध मंडल

अध्यक्ष महोदय, माननीय पदाधिकारी, उपस्थित बंधुगण, माताअे,

आज जबकी भा. म. संघ २९ साल पूरे करते हुअे ३० वे वर्ष मे पदार्पण कर रहा है, हम संक्षेप मे स्मरण कर ले के हम क्या है ? हमारा कार्य क्या है ? और इस दृष्टीसे हम सब जानते है की भा. म. संघ यह एक जेन्युइन ट्रेड युनियन ऑर्गनायझेशन है । इतनाही नही परंतु मजदूर कार्यकर्ताओंका और मजदूरोंका यह एक परिवार है । हम संपूर्ण राष्ट्र को एक परिवार के रूपमे मानते है, इसका एक अविभाज्य अंग है और इतनाही नही तो राष्ट्र पुनर्निर्माण के लिये हिंदुस्थानकी राष्ट्रशक्तीने विभिन्न मोर्चोंपर जो अपनी सेनाओंके विभाग लगाये है, उनमेसे एक मोर्चा औद्योगिक क्षेत्रका मोर्चा सम्हालने वाला, हिन्दुस्थानकी राष्ट्रशक्तीके सेनाका विभाग इस रूपमे हम है । यह जो अपना स्वरूप है इसका संक्षेपमे हम पुनः स्मरण कर ले तो जो जो समस्याओं सामने आती है उनके विषयमें हम क्या भूमिका लें इसका स्पष्टीकरण स्वयंही अपने मनमे हो जाएगा । जो हमारी सैद्धांतिक भूमिका होगी, उसीके अनुकूल हर समस्याकी ओर देखनेका हमारा दृष्टीकोण रहेगा और इसी दृष्टीसे संक्षेपमे भा. म. संघका स्वरूप क्या है इसका विवरण प्रारम्भमें मैंने किया ।

हम जानते है की हैदराबादके अधिवेशनमे यह तय हुआ की यह पूरा वर्ष Anti-Computerisation Year इस नाते मनाना चाहिये । अब यह बात ठीक है की Computerisation का प्रारम्भ हिंदुस्थानमें लगभग तीन दशक पूर्व हुआ, किन्तु इस समय विशेष रूपसे इस सवालकी दखल लेना हमारे लिये आवश्यक हुआ इसका कारण यही था की पिछले साल कुछ महिने पूर्व बैंकिंग इंडस्ट्रीमें मालिकोंकी संस्थाने, आय. बी. ए. ने, सभी बैंक कर्मचारियोंके संघटनों के सामने एक ऐसा सवाल रखा की आप Computerisation मान लेंगे, तो Wage Negotiation के लिये हम आपको बुलाएंगे और आप इसे नही मानेंगे तो Wage Negotiation के लिये हम आपको नही बुलाएंगे । कम्युनिस्टोंकी युनियन जो कई वर्षोंसे काम कर रही है, उन्होंने Computerisation को मान लिया । बाकी युनियनोंका मैं उल्लेख नही करता, क्यों कि उनका अस्तित्वही नाममात्र है । किन्तु इस युनियनेने जो सबसे पुरानी युनियन है, Computerisation को मान लिया । हो सकता है कि उनके मनमें यह हो कि Wage Negotiation मे वे एक पार्टी के रूपमे रहेंगे तो उनका रुब्बा रहेगा, उनकी भी इज्जत रहेगी । व्यक्तिगत प्रतिष्ठा, संस्थागत प्रतिष्ठाका रुब्बा करते हुअे, मजदूरों के साथ विश्वासघात करते हुअे, उन्होंने Computerisation को मान लिया । लेकिन अपनेसे संलग्न NOBW ने स्पष्ट रूपसे कहा की हमे आप Wage Negotiations मे बुलाअे या न बुलाअे, हमे आप Recognise करे या न करे किन्तु केवल Recognition या अपनी प्रतिष्ठाके लिये हम मजदूरोंका विश्वास-

धात करने तैयार नहीं। कम्युनिस्टोंने यह देखा, और हम लोगों के खिलाफ प्रचार भी शुरू हुआ। Computerisation के बारे में सही National, राष्ट्रवादी, उपयुक्त भूमिका लेना वैसेभी कठिन था क्यों की Computerisation के जो समर्थक है, पक्षपाती लोग है, वे बहुत पैसेवाले है, उनके पास आर्थिक सत्ता है, शासकीय सत्ता है और इतना धुआँधार प्रचार Computerisation के बारे में चल रहा है की जैसे Computer चारों ओर लाने से इस धरतीपर स्वर्ग आनेवाला है, इस तरह का एक भ्रम लोगोंके मनमें निर्माण हो रहा है। इस अवस्थामें जब कम्युनिस्टोंने यह देखा की यह NOBW या BMS के लोग Computerisation के 'Agreement पर दस्त-खत करने के लिये तैयार नहीं, तो कहीं वे न Wrong Side में आ जाएँ इसलिये हमारे खिलाफ उन्होंने प्रचार शुरू कर दिया। शासन का, सरमायदारोंका Computerisation के पक्षमें जो धुआँधार प्रचार चल रहा था उसके कारण कम्युनिस्टों के लिये भी सुविधा हो गयी। वैसे Computers का समर्थन कम्युनिस्टोंने करना, इसमें आश्चर्य की बात नहीं है। शायद आपमें से कई लोगोंको इसका पता होगा की Soviet Russia के जो Theoreticians है उन्होंने ये कहा है कि Computerisation के कारण Highest Stage तक हम लोग पहुँच सकते है, ऐसा रशिया का विचार है। आप जानते है कि Computerisation के कारण केन्द्रीकरण होता है, निर्णय लेने की प्रक्रियाओंका बहुत बड़ा केन्द्रीकरण Computerisation के कारण होता है। केन्द्रीकरण कैपिटलिस्टोंके लिये अभिप्रेत है, चाहे Private Capitalism रहे, चाहे State Capitalism। जिसको Communism कहा जाता है वह भी Capitalism है। चाहे Private Capitalism रहे, चाहे State Capitalism रहे, दोनोंकों केन्द्रीकरण अभिप्रेत है। और इस दृष्टीसे जिस समय Khrushchev प्रिमियर थे उन्होंने कहा था, कि ये Computerisation एक चीज ऐसी है, जिसका हम उपयोग कर सकते है जिसके कारण हम अपनी सत्ता बढ़ा सकते है और जो Private Capitalism में बाकी लोग है उनको हम मजा चखा सकते है। Soviet Theoretician refer to automation as "the means by which mankind will achieve the highest of estates". Premier Khrushchev had said, "Automation is good; it is the means we will use to lick you capitalist". What he meant was that through Automation state capitalism would bring down Private Capitalism. इसलिये यदि AIBEA ने Soviet Theoreticians का अनुकरण किया होगा और अपने Computerisation स्वीकृतिका समर्थन किया होगा उसमें आश्चर्य की बात नहीं।

जिस समय सर्वप्रथम इंग्लंडमें नई मशीनरी आयी तो वहाँके बुनकरोंने उसका विरोध किया और मशीनरी तोड़नेका प्रयास किया। उन बुनकरों के नेता का नाम था, Mr. Ned Ludd. इसलिये नयी मशीनरी आने के बाद जो मशीनरी की तोड़फोड़

करते हैं, उनको Luddite कहने की एक पद्धती Great Britain में है । तो कम्युनिस्टोंने भी कहा की ये भा. म. संघवाले Luddites है, Obscurantist है, पुराने जमाने के सोचनेवाले है, Out-dated है, केवल मशिनरी की तोडफोड करना जानते है दुनिया कितनी आगे जा रही इनको पताही नहीं है । इस प्रचार के बावजूद, राष्ट्र के लिये यदि आवश्यक है तो दृढता से हम अपनी भूमिका का प्रतिपादन करेंगे, चाहे हमारी भूमिका लोकप्रिय रहे या न रहे । यह सोचकर हैदराबाद के अधिवेशन मे ऐसा निर्णय लिया गया कि यह वर्ष Anti-Computerisation Year के नाते मनाया जाय और इस विषयमें हमारी क्या भूमिका है यह समझाया जाय ।

हम लोग न Luddite है, न किसी extreme पर जानेवाले है । हम जानते हैं कि कोई भी extremist भूमिका संपूर्ण राष्ट्रके हित के लिये अनुकूल नहीं हो सकती । किन्तु साथ ही साथ कोई नई बात है, attractive है, पश्चिमके लोगोंने स्वागत किया इसलिये तुरन्त हमभी उसका स्वागत करें, यह हम ठीक नहीं समझते । पश्चिम के लोगोंमें भी Computerisation के बारे में आज विवाद चल रहा है । जिन्होंने पहले स्वागत किया था वे भी सोच रहे है कि उनके लिये एक भस्मासूर, एक Frankenstein खडा होगा । यह चिंता जब उनके मनमें है, तब हम तर-तम भाव न रखते हुअे, indiscriminately, computerisation का स्वीकार करे यह बात ठीक नहीं । और इस दृष्टीसे इसके जो विभिन्न पहलू है, ये जनताके सामने आने चाहिये । इस विचारपर हमारे कुछ ट्रेड यूनियन के बन्धुओंको आश्चर्य होगा । कई लोगोंके सोचनेका ढंग है कि औद्योगिक क्षेत्रमें जो कुछ भी चलता है,—संघर्ष या समझौता—यह केवल मजदूर और मालिकोंका घरका मामला है, घरेलू सवाल है । आम जनता और राष्ट्रका इससे संबंध नहीं है । भारतीय मजदूर संघ प्रारंभसे यह कह रहा है की औद्योगिक संबंध (Industrial Relations) यह मालिक और मजदूरोंका घरेलू सवाल नहीं है । यह घरकी खेती नहीं है । केवल मालिक और मजदूर दोनों आपसमे यदि समझौता कर ले, और चाहे जो agreement करे, इतनी सरल बात नहीं है । इसमे तीसरी एक पार्टी है । Industrial Relations के लिये वह पार्टी है संपूर्ण समाज, संपूर्ण राष्ट्र । जो भी agreement होगा वह केवल मालिक और मजदूरोंके आपस के सुविधा के अनुसार हो इतनाही पर्याप्त नहीं है, तो संपूर्ण राष्ट्रके लिये यह सुविधाजनक, लाभदायक, उपकारक तथा पोषक हो और इसके कारण भा. म. संघने यह प्रारंभसे कहा की जहाँ जहाँ agreement होते है, वहाँ वहाँ मालिक और मजदूर दोनोंने यह ध्यानमे रखना चाहिये कि समाज, राष्ट्र यह एक तीसरा पक्ष Industrial Relations का है । मालिक और मजदूर ये जब agreement करते है तो उसका मतलब होता है कि उन्होंने राष्ट्रके प्रति यह सारे आश्वासन दिये हुए है, उसीका नाम agreement है और उसके कारण Industrial agreement को National Commitment ऐसा कहना चाहिये यह भी सुझाव भारतीय मजदूर संघने बहुत प्रारंभमें दिया था, यह भी आपके ख्यालमें होगा ।

खासकर Computerisation यह एक सवाल ऐसा है कि इस विषयमें केवल मालिक और मजदूर आपसमें समझौता करलें यह बहुतही खतरनाक बात है। आप जानते हैं, १८ वीं शताब्दिमें पहली औद्योगिक क्रांति हुयी थी। James Watt, Richard Arkwright इन्होंने नई मशिनरी लाई। Steam Engine, Powerloom, Railway, Cotton-Gin इत्यादि कारखाने निर्माण हुए। जो मनुष्यकी 'Muscle-Power' थी उसथा स्थान धीरे धीरे Progressively, अधिकाधिक मशिनरी लेती गयी। The First Industrial Revolution of the 18th Century saw the Machine replacing the muscle-power. किन्तु साथही साथ आपने दो सौ सालमें यह देखा होगा के केवल मशिनरी आयी यहाँतक यह परिणाम सीमित नहीं। तो सारे विचारपद्धतीमें, जीवनपद्धतीमें और सांस्कृतिक मूल्योंमें परिवर्तन आया। अिस तरहसे Civilisation में परिवर्तन आया। केवल जो Muscle Power थी उसकी जगह Machinery ने ली इतना सीधा मामला नहीं था तो Character of Civilisation has undergone a Change, सभ्यताका स्वरूप बदलता गया यह दो सौ सालमें हम लोगोंने अनुभव किया है। अब काँप्युटर्स के कारण आनेवाली यह Second Industrial Revolution है।

This Second Industrial Revolution will create—

A whole new environment,

A whole new civilisation,

A whole new tempo and outlook,

A whole new way of life, and

A very different kind of Tomorrow.

इसलिए इसपर निर्णय केवल एक Industry के मालिक और मजदूर नहीं ले सकते, संपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र के मालिक और मजदूर नहीं ले सकते, तो संपूर्ण समाजके विचारवंत लोगोंने इसके विषयमें सोचनेकी आवश्यकता है। जो निर्णय होगा वह राष्ट्रका निर्णय होना चाहिये। केवल मालिक और मजदूरोंका निर्णय नहीं हो सकता। हमारे दुर्भाग्यसे, पश्चिमके सहवासके कारण हमारी जो भारतीय विचार पद्धति थी, की सभी बातोंका समग्रता के साथ विचार करना—जिसको स्व. पंडित दीनदयालजी Integrated Thinking कहते थे—, यह बात हमारे लोग छोड़ रहे हैं। खासकर, जो अपने को Liberal, Progressive, Radical, Revolutionary, Total Revolutionary etc. etc. कहलवाते हैं, उन्होंने समग्रतासे विचार न करनेका निश्चय किया है। जो चीज लुभावनी दिखेगी, उसीका नारा लगाना यही पर्याप्त है ऐसा वे समझते हैं, क्यों कि सस्ती लोकप्रियता के अलावा उनके सामने दूसरा विचार नहीं है। और इसके कारण हर एक प्रश्न के सभी पहलुओंका विचार करनेकी आवश्यकता है यह बात भूल जाते हैं। लेकिन राष्ट्रकी दृष्टीसे सभी पहलुओंके बारेमें गहराई में जाकर सोचना, यह उपयुक्त रहेगा।

वैसे Computerisation यह कितनी बड़ी बात है ! Computerisation is an asset ! Computerisation is a liability !! आखिर मशीन है ! मशीन का न अपना गुण है, न दोष है । जो उसका उपयोग करनेवाले लोग हैं, ठीक ढंगसे उपयोग करे तो asset भी हो सकता है, वे गलत ढंगसे उपयोग करेंगे तो बहुत बड़ी Liability भी हो सकती है । किन्तु यह कितनी महत्वपूर्ण घटना है इसकी विषयमें अमरिका के कुछ विचारकोंने कहा की इसके कारण जो Problems निर्माण होनेवाले है उन Problems का पूरा विचारभी हम लोग आज नहीं कर सकते । It is very difficult to know the upto-date position and its implications एक विचारकने ऐसा कहा है कि Computerisation के कारण निर्माण होनेवाली समस्याओंका निराकरण अधिक कठिन है, उसकी तुलनाने चंद्रमापर अमेरिकन आदमीको भेजना जादा आसान है । दुसरे विचारकने इसकी तुलना Splitting of the Atom के साथ की है । युद्धशास्त्रमें प्रगती होती गयी, Conventional Weapons आते गये किन्तु दुसरे महायुद्धके समय, Splitting of the Atom याने केवल युद्धशास्त्रकी प्रगतीमें एक अगला कदम यह माना नहीं गया वह एक अजीब ढंगकी, एक नई ढंगकी क्रांति मानी गयी । वह जिस तरहकी क्रांति थी उस क्रांतिके कारण आज Stockpiling of nuclear Weapons — अणुशस्त्रोंका संग्रह—हो रहा और संपूर्ण विश्व एक तरहसे विनाशके किनारेंपर खडा है । उसीतरह महत्वपूर्ण क्रांति याने Computerisation है और इसी दृष्टीसे इसका विचार करना चाहिये । केवल तंत्रविद्याकी प्रगती हो रही थी उसमें एक अगला कदम याने Computerisation है, यह कहना पर्याप्त नहीं होगा, ऐसा वहाँके विचारकोंने कहा । मैंने जब Integrated Thinking कहा, तो शायद हमारे कई Progressive भाईयोंको ये लगेगा कि इसमें Integrated Thinking की आवश्यकता क्या है ? हमारे ऊपर क्या परिणाम होता है यह तो देखेंगे लेकिन संपूर्ण राष्ट्रको विश्वास में लेनेकी आवश्यकता क्या है ? कुछ उदाहरण अिसके विषयमें मैं प्रस्तुत करना चाहता हूँ ।

जैसे मैंने कहा की करोडो, अब्जावधि रुपया इस Computerisation के प्रचार के लिये खर्च हो रहा है । हिटलरने कहा था “यदी प्रचार के सभी माध्यम मेरे हाथ में रहेंगे तो मैं संपूर्ण राष्ट्र को आत्महत्या करने के लिये प्रवृत्त कर सकता हूँ ।” हिटलर ती शायद यह नहीं कर सका लेकिन ये Computerisation वाले अवश्य इस बातका अनुकरण कर रहे है, तो और इसमें सफलता प्राप्त करेंगे ऐसा कुछ भय मन में हो रहा है, तो यदि किसीने उनको रोका नहीं हमने बचपन में एक कहानी भी सुनी थी । सारी बताने की आवश्यकता नहीं, संस्कृत में थी । त्रयाणाम् धूर्तानाम्—इसमें प्रचार का परिणाम झूठको सच मानने में कैसा होता है, यह बताया गया है । तो अब यह प्रचार भी चलता है कि इसके कारण

कम काम करना पड़ेगा और जादा फुरसद हर एक को हो जाएगी। आपको आश्चर्य होगा की जो **Sociologist** है, समाजशास्त्री है, उनके सामने आज यह प्रश्न है, कि यदि संपूर्ण समाजको बहुत ज्यादा फुरसद मिलती है तो समाजस्वास्थ्य कैसे बना रहेगा? फुरसद तभी लाभदायक हो सकती है जब जिनको फुरसद मिल रही उनका सांस्कृतिक स्तर अच्छा होगा। जिनका सांस्कृतिक स्तर और शिक्षाका स्तर अच्छा गही, ऐसे लोगों को यदि **Leisure**, फुरसद मिल जाती है तो उसके कारण समाजमे आतंक फैल सकता है, यह जगह जगह का अनुभव है। समाजशास्त्रज्ञ इसपर विचार कर रहे हैं। हम जानते हैं कि बेरोजगार लोग यदि हैं, और असंस्कृत भी हैं तो स्वाभाविक रूपसे बेरोजगारी के कारण फुरसद है, असंस्कृत होनेके कारण मनपर संयम नहीं है, चाहे जिस साधनसे हम अपना इप्सित पूरा करेंगे यह इच्छा है, तो आज जितनेही गुनाह करनेवाले लोगोंके नाम आते हैं उसमे आप देखेंगे इसीतरहसे जो एक तरफ बेरोजगार भी है, चाहे पहले **Army** में थे आज उनको छुट्टी मिल गयी इसलिये बेरोजगार है, या चाहे पहलेसेही बेरोजगार है, लेकिन अपनी इच्छा पूरी करनेके लिये या पेट पालनेके लिये और डकैती करनेके लिये या खून-खराबी करनेके लिये प्रवृत्त हुअे ऐसेभी उदाहरण हैं। और इतनाही नहीं तो जो संपन्न हैं, संपन्न लोग भी यदि सुसंस्कृत नहीं हैं, तो खून-खराबी और बाकी गडबडी करनेके लिये प्रवृत्त होते हैं। अमरिका का अनुभव है, हमारे यहां का भी अनुभव है। तो जहाँ फुरसद मिलती है वहाँ पहलेसे सुसंस्कृत मन यदि नहीं होगा तो फिर वो फुरसद का परिणाम **Empty mind is devils' workshop**,—जो खाली मन है यह शैतान की कार्यशाला है—इस दृष्टी से या तो लोगोंको **busy** रखा जाय और यदि **busy** नहीं है तो सुसंस्कृत किया जाय। हमारे देशमें आज साक्षरताका प्रमाण कितना कम है आप जानते हैं। ४२ करोड़ लोग निरक्षर १२ करोड़ लोक अर्ध-निरक्षर, जैसे देशमे यदि लोगों को फुरसद होगी जैसा इन्होंने कहा—वास्तवमें यह सही है या गलत यह बादमे देखेंगे—लेकिन यदि फुरसद हो गयी तो लोगोंकी मनस्थिती क्या रहेगी यह एक सोचने का विषय है। केवल हमें हमारी **leave** मिलती है कि नहीं, पैसा मिलता है कि नहीं, **Pension** मिलता है कि नहीं, मालिक अपनी जगह खूष ! मजदूर भी अपने जगह खूष !! बाकी समाज चूल्हेमें जाए, जहन्नममें जाए !!! असा कहते हुअे हम नहीं चल सलते। तो समाज-शास्त्रका यह एक प्रश्न खडा होता है, जिसके बारेमे फैसला समाजशास्त्र के लोगोंने बताना आवश्यक है।

वैसे हम जानते हैं मानशास्त्रका इससे संबंध है। शरीरके लिए तो पीडा होती ही है। जो काम है, उसके कारण, **Computer** के कामके कारण आँखोंपर बहुत **Strain** आता है, पीठमे दर्द शुरु होता है,। **Concentration** करना पडता है, और इतनाही नहीं तो इतना **boredom** हो जाता है। **Monotonous** काम



हो जाता है, और खास कर एक जगह बहुत लोग आते थे वह दृश्य तो आज नहीं दिखाई देता। तो एक आदमी केवल देख रहा है, यंत्र काम कर रहे हैं या नहीं, अकेले रहनेके कारण घंटोतक—एक तरहका **isolation** हो जाता है और एकही तरहका **repetitive job** एकही तरह का काम लगातार करने के कारण मनुष्य के **Psychology** पर कुछ असर होता है इसके बारेमें क्या किया जाय यह **Psychologists** के सामनेभी प्रश्न है। मैं कॉलेजमें था तब एक पिक्चर आयी थी जिसका नाम था **The Shape of things to come** उसमें तो पहले **Industrial Revolution** का परिणाम दिखाया था। **Repetitive** तथा **monotonous job** के कारण आदमी अपना मानसिक संतुलन कैसे खो बैठता है, यह इसमें चित्रित किया था। अब ये महान दूसरी **Industrial Revolution** आ रही है। इसके कारण जो **psychology** बनेगी, आदमी अपनी **Identity** मशीन में कहीं खो न बैठे, उसका व्यक्तित्व बचाया जा सके इसलिये क्या किया जा सकता है यह **Psychologist** के सामने भी एक प्रश्न है।

फिर हम जानते हैं कि हमारे कुछ **Social objectives** हैं। **Social objectives** में जो आजकल अपने को समाजवादी वगैरा कहलवाते हैं, उनका बड़ा प्रिय शब्द है, समता! समता आनी चाहिये, समानता आनी चाहिये!! और इस दृष्टीसे जो विषमता है उसकी खाई कम करनी चाहिये। अब यह प्रचार हुआ है, **computerisation** के कारण उत्पादन बहुत तेजीसे बढ़ेगा। हालांकि मजदूरों की संख्या बहुत कम होगी। किसीने उनका वर्णन किया है कि '**Material abundance and Human redundancy**' भौतिक समृद्धि बहुत बढ़ रही और मनुष्य बेकार होते जा रहा। अब **United States** में क्या होता है उनको अभीतक पता नहीं किन्तु वहाँ भी अब शिकायते शुरू हुई हैं। लेकिन हम अपने देशका विचार करें। यहाँ ६० प्रतिशत लोग दरिद्र रेखा के नीचे हैं। आपने बहुत माल पैदा किया। माल पैदा करके करेंगे क्या? **Godowns** में रखेंगे? वह बेचा जाना चाहिए। कुछ मुनाफेके, **margin** के साथ आप बेचना चाहते हैं। कौन खरीदेगा? ये जो ६० प्रतिशत लोग दरिद्रेखाके नीचे हैं वे खरीदेंगे? फिर यहाँ जो माल निर्माण होता है उसके लिए **Export** तथा निर्यात की अच्छी सुविधाभी नहीं है क्यों कि जो **developed countries** हैं, उनका माल वहाँ **dump** किया जाता है। तो इसके कारण आप माल पैदा करेंगे इसके बेचनेका काम कहाँ होगा यह एक सवाल है क्यों कि ज्यादातर लोग गरीब हैं। और यदि इस तरह का माल पैदा होता है जो थोड़े श्रीमान लोक हैं वे ज्यादा श्रीमान बन जाते हैं, तो विषमताकी खाई बढ़ेगी या घट जाएगी?

दूसरा एक प्रचार आपने सुना। कहा जाता है कि **Computerisation** के कारण नये नये **jobs** निर्माण होते हैं। अब ये कुछ मात्रामें सही है। लेकिन,

कौनसे jobs निर्माण होते हैं? वह Jobs जो highly technical है, जिन jobs का training लेनेके लिये भी शिक्षाका स्तर काफी ऊँचा चाहिए। Computerisation से निर्माण होनेवाले jobs माने Scientists, Technicians, Engineers, Specialist in Electronics, Mathematicians इस तरहके Specialisation के jobs हैं। मैंने कहा कि जिस देशमें ४२ करोड़ लोक बिलकुल निरक्षर हैं, और हायस्कूल के drop-outs की संख्या भी हमारे यहाँ बहुत है। ये लोग इस स्तरपर जानेवाले नहीं हैं। और अिसके कारण हिंदुस्थान में तो छोड़िये—यहाँ तो निरक्षरता बहुत ज्यादा है—जहाँ शिक्षाका स्तर अच्छा है अुस United States में भी जो शिक्षा के दृष्टीसे पिछड़े हुअे लोग हैं उन्होंने यह चिल्लाहट की है कि इस Technology के कारण अमरिकन्सका नुकसान हो रहा है। खासकर निग्रो लोग हैं, अमेरिकन इंडियन्स हैं, अमेरिकन मेक्सिकन्स हैं—ये जो Non-anglo sections हैं जिनका शिक्षाका स्तर छोटा है। उन्होंने कहा कि सर्वसाधारण अमरिकन और अुनके बीचमे जो खाई है वह बढ़ती जा रही है, विषमता बढ़ती जा रही है और इसके कारण वे और भी गरीब होते जा रहे हैं, उनका सामाजिक स्तर छोटा होता जा रहा है। अमरिका जैसे देशमे, जहाँ शिक्षाका स्तर अच्छा है, यदि यह शिकायत निग्रोसे ओर बाकी लोगोंसे आती है, तो हमारे देशके वनवासीयोंका क्या होगा? थोड़े सुशिक्षित लोग तो Master बन जाएँगे। अिससे क्या दृष्य निर्माण होगा और वह हमें अभिप्रेत है क्या अिसका विचार कीजिये। Karl Marx के जीवनके अंतिम चरणमे उनके Polish शिष्योंने उनको एक प्रश्न पूछा था। उस समय सायन्स की कुछ प्रगति शुरु थी। उनके Polish शिष्योंने प्रश्न पूछा— जो आपने *haves and have nots* यह आर्थिक आधारपर (*economic basis* पर) किये, जिससे आपका मतलब है *economic haves* और *economic have nots* किन्तु जब Science और Technology की प्रगती बहुत हो जाएगी तो क्या अिन लोगोंकी सामाजिक क्षमता नहीं बढ़ेगी? *Strategic positions* में ये लोग नहीं आयेंगे? जिनको *Knowledge Classes* कहा जाता है क्या *strategic positions* मे नहीं आयेंगे? और यदि ये *Strategic positions* में आ जाते हैं तो क्या *haves and have nots* का अर्थ *educational haves and educational have nots* ऐसा नहीं होगा? और यदि *educational haves and have nots* ऐसा समाजका विभाजन होता है तो जो *educational haves* हैं, वे अपने *strategic position* का उपयोग करते हुए संपूर्ण समाजको *ransom* मे पकड़ेंगे क्या यह हो नहीं सकता? जैसे *economic haves* शोषण कर रहे हैं, *educational haves* शोषण नहीं करेंगे क्या?— पूछा गया था। इस सवालका जबाब देनेकी बारी उनके उपर नहीं आयी। किन्तु यह प्रश्न उस समय पूछा गया था। आज *educational haves*

का यह एक class निर्माण हो रहा है। और जैसे James Burnham ने अपने **Managerial Revolution** में **Managerial Class** के बारे में कहा था, कि जो **share holders** हैं वे **decision making** नहीं कर सकेंगे, जो मजदूर हैं वे भी **decision making** नहीं कर सकेंगे, तो यह जो **Managerial Science** जाननेवाले लोग हैं उनके ही हाथ में **decision making** रहेगा। तो पैसा **share holders** का, श्रम मजदूरों का, लेकिन **decision making authority** याने **managerial cadres** ऐसी स्थिति हो जाएगी। शायद इस **computerisation** के कारण इतना ही परिवर्तन हो रहा है कि अब **managerial cadre** का भी उतना महत्व नहीं रहेगा। केवल, **Technocrats** का महत्व रहेगा। याने जो वास्तव में सत्ता है—निर्णय लेने की सत्ता—वह न मजदूरों के हाथ में रहेगी, न मालिकों के हाथ में, न मॅनेजर्स के हाथ में रहेगी। आज पश्चिमी देशों के **managerial circles** में भी यह चर्चा बड़ी जोरों से शुरू है। आपको आश्चर्य होगा उन्होंने इसका हिसाब निकाला है। हम सोचते हैं कि **managerial cadre** ये **decision making** के लिये हैं, उन्होंने कहा कि कमसे कम २५ प्रतिशत कार्य तो **clerical cadres** मॅनेज करते हैं। और ये **computer** २५ प्रतिशत कार्य कर लेगा। और दूसरा उन्होंने कहा कि बहुत सारे मॅनेजर्स यह मॅनेजमेंट नहीं करते क्यों कि **computer** मॅनेजमेंट कर सकता है उसको यदि **properly feed** किया, **programme** किया तो वह मॅनेजमेंट कर सकता है। वहाँ यह चर्चा चल रही है, कि ये केवल **information tubes** हैं, ये पोस्टमन का काम करते हैं, स्वयं **decision making** avoid करते हैं। अपने यहाँ एक किताब आपने पढ़ी होगी—**In the Wonderland of Managers**—श्री. रांगनेकरजी की किताब है। उसका पहिला ही **Chapter** है, 'How to avoid decision making?' मॅनेजर किस तरह की अलग अलग तरीकों का उपयोग में लाता है **decision making** टालने के लिये यह इसमें बताया है। तो वहाँ भी उन्होंने कहा कि ये तो केवल **Information Tubes** का काम करते हैं, और इसके कारण **computerisation** का अबतक का प्रमुख कार्य जो था, वह **clerical** और **secretarial staff** का काम कम करना यह था लेकिन अब जो कार्य रहेगा, यह कार्य **managerial cadre** का भी काम कैसे कम करना यह देखना है और इसके कारण **managerial cadre** भी **superfluous** होते जा रहा है, जिसके कारण खासकर वहाँ के **middle management circles** में **computerisation** के कारण बड़ा तहलका मच गया है। यह पश्चिमी देशों का हाल है। तो वहाँ जो **managerial revolution** के बारे में कहा गया था, यह **technocratic revolution** एक प्रकारसे हो रही और इस तरहसे जो **decision making** का केन्द्रीकरण होगा, **centralisation** होगा क्या

यह **centralisation** हमारे **social objectives** के साथ मेल रखनेवाली बात है, यह भी एक सोचने का प्रश्न है। कहनेका मतलब है कि ऐसे तो और प्रश्न हो सकते हैं, मैं केवल उदाहरण के तौरपर सारी बातें बता रहा हूँ। यह जो एक **romantic** चित्र **computerisation** के समर्थक पेश कर रहे हैं वह अतना **all rosy** नहीं है, और जहाँतक मजदूरोंका सवाल है उन्होंने तो इस प्रचार के बहकाने न जाते हुअे, अपने यहाँ की क्या स्थिति है यह देखकर, अुसके बारेमें निर्णय लेना चाहिये। और इस दृष्टीसे जो संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न हैं उनके जिक्र में पश्चिमका अनुभव मैं संक्षेपमें बताना चाहता हूँ।

एक तो उन्होंने यह अनुभव किया है कि **technological changes** बहुत क्रांतिकारी है और वस्तुतः किसी भी एक दिन यह कहना बहुत कठिन है कि उस दिन **exact position** क्या है? क्यों कि हर दिन इसमें कुछ न कुछ प्रगति हो रही है, एक तरहसे **This is the revolution of information technology.** और **Information Technology** का महत्व इतना है, कि और आज आपको आश्चर्य होगा कि जिन **multi-nationals** के खिलाफ केवल भारतीय मजदूर संघने ही—**out of all the central labour organisations**,—सबसे जादा प्रचार किया है। यह **multi-national corporations** विभिन्न अविकसित (**developing**) देशोंके सरकारोंको लालच देते हुए अपना काम चला रहे हैं। तो जिस समय **computerisation** का **introduction** होता है उस समय वे मजदूरोंको पूरी **information** देते नहीं यही केवल बात नहीं तो वहाँके स्थानीय सरकारोंको भी पूरी **information** देते नहीं—और अविकसित देशोंके सरकार **under obligation** होने के कारण पूरी **information** उनसे मंगवा भी नहीं सकते। तो यह जो **information** है यह एक तरह से अविकसित देशोंको और उनके सरकारोंको **black-mail** करने का एक साधन **multi-national corporations** ने बनाया है। यह जो **revolution of information technology** है इसमें **multi-national corporations** बहुतही **strategic position** **occupy** कर रहे हैं यह बात हम ख्यालमें रखें। इसके विषयमें निश्चित और सर्वांगपूर्ण जानकारी रखना कितना कठिन है, यह इस प्रश्नोत्तरसे आपके ध्यानमें आएगा। **Mr. W. Willard Wirtz** अुस समय सेक्रेटरी ऑफ लेबर थे उनको पूछा गया,

“Do you think we have enough, informations, just to start with, on the character of the problem and its dimension, and, much more important, its potential?”, he frankly replied “We do not”.

ये अमरिका के लेबर सेक्रेटरी का उत्तर है। हमारे AIBEA के लोग तो पूरी जानकारी रखते हैं। लेकिन अमरिकाके लेबर सेक्रेटरी कहते हैं कि उनके पास पूरी Information नहीं है। उन्होंने आगे कहा, जो अधिक महत्वपूर्ण है कि “We cannot take it for granted any longer that automation does create jobs.” यह जो प्रचार है कि इसके कारण नये नये jobs निर्माण होते हैं इसपर हम विश्वास नहीं रख सकते — we can't take it for granted — ऐसा उन्होंने स्पष्ट रूपसे कहा है। अब यह सुनिये।

Prof. Arnold R. Weber of the University of Chicago presented to the London Conference a catalogue of issues for research on International, National and Local levels—The issues were nearly 100,—and yet he said that his list was “neither exhaustive, nor definitive”

The Presidential Railroad Commission of U. S. declared that “Revolutionary Changes even for the better, carry a high price in disruption, that might exceed the value of the improvements”.

अब जहाँ हमारे देश का सवाल है, मैंने कहा कि लगभग तीन दशक पूर्व अपने यहाँ बड़े systematically काम शुरू हुआ। Earlier, the applications taken up were—Payroll; Incentive calculations; and spare part sales. Computer activity started with technical processing and material control, rather than with accounts. ऐसेही जगह काम शुरू किया जहाँ एकदम संख्यां कम नहीं होगी, ज्यादा खराब असर नहीं होगा। इस तरहसे Unit Record Machine के सहारे उन्होंने computerisation का background तैयार किया।

Unit Record Machines prepared the ground for computerisation. Now : Pay roll, Financial Accounting, Billing; Production Scheduling and control; Inventory Control, and Stores Accounting. इन कामोंके लिये अब आम तौर पर इसका उपयोग किया जाता है। Public Sector Govt. Offices Educational institutions इन क्षेत्रोंमें तथा Research and Development और Manufacturing. processes में भी बहुत भारी पैमानेपर progressively इसका उपयोग किया जा रहा है।

On June 6, 1964, the Computer Society of India was formed.

## TYPES OF APPLICATION IN INDIA

Pay roll, Cost Accounting, Financial Accounting; Billing Invoicing; Stores Accounting; Inventory Control; Production Scheduling and control; Sales Analysis; Operations Research and Development; Education and Training; Programme Testing.

- 1) **Pay Roll**-the most important application in India.
- 2) **Research and Development**-Second most important application after pay roll-in terms of computer time.
- 3) **Stores Accounting**-Third important application in terms of computers' time.
- 4) **Financial Accounting**-Fourth important application.....
- 5) **Production Scheduling and control**-Fifth important application

Other applications, each accounting for about 5% of the Computer time, are **Cost Accounting; Inventory Control; and Sales Analysis.**

और शुरूमे जिन कामोंके लिये इसका उपयोग किया गया, उसमे working time of the computer की दृष्टीसे सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण काम pay-roll का था, Research and Development का था, Stores Accounting No. 3 का था, Financial Accounting Production Scheduling and Control था और फिर ५% से कम working time लेनेवाले ऐसे items, जिसमे Cost Accounting, Inventory Control और Sales Analysis आते है। शुरूमें उन्होने यह प्रयास किया कि ज्यादा कहीं dislocation न हो, और ज्यादा लोगोंको पता न चले किन्तु आज हम जानते है कि धीरे धीरे उनका भी हौसला बढ़ रहा है और सरकार तथा अन्य लोग भी— क्यो कि अब चुनाव भी आ रहे, है पैसे की भी आवश्यकता है इसलिये— सरमायदारोंका पुष्ठ पोषण करने का काम सरकार भी चला र ही है।

अब पहला जो Industrial Revolution का जमाना था उसमे और इसमे अंतर ये है कि वह केवल muscle power को रिप्लेस करता था। Automation के बारेमे कहा गया है कि "This is the mechanisation of sensory, thought and control processes. These are the machines that learn". पहले यह नही था, अब ये। सीखते है "and deal with the very core of human Society i. e. with information, its communication and use". अब Mr. John Diebold जिन्होंने यह शब्द coin किया है, वे Automation का वर्णन करते है,

Diebold describes automation as a "Technology which vastly extends the range of human capability and which will fundamentally alter human Society".

"The very nature of this technology, its concern with the building blocks of human society, will, in the course of the life time of many of us, force us to reconsider our whole approach to works, to Society, and to life itself".

मैंने जो **Integrated approach** की बात कही उसका महत्व आपके ख्यालमें आया होगा और इसलिये उन्होंने कहा;

The combination of Automation approaching infinity and total employment approaching Zero provides, in the phrase of President Kennedy, "The domestic challenge of the sixties, For America".

इस संबंधमें, सर्वप्रथम सभी संबंधित पक्ष—सरकार, मालिक, मजदूर—विचार विमर्ष करने के लिये मई १५, १९६३ को न्युयॉर्क में हुई **conference** में शामिल थे। इसमें शामिल हुई विचारवंतों का कहना मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

**A Conference of the Representatives of Govt., Labour and Management** : The first ever conference of this type was held in New York on may 15, 1963. To consider the problem of **Material Abundance and Human Redundance**.

- I. **Mr. Charles Killingsworth** says - "My own bank in Lansing, Machigan, had 400 employees in the Accounting Department before computerisation. Now there are 75; and the Bank completes about twice as much work."
- II. The "**Detroit Automation**" of old type, reduced the labour requirements by 90%.
- III. Wherever introduced in Navigation, computers completely **displaced Navigators**.
- IV. Permanent elimination of **tens of thousands of Elevator Operators'** jobs in New York City.

Killingsworth tells us that even a **Vice President** of a company was displaced by a Computer.

On July 22 1963, **President Kennedy** announced the appointment of a **Presidential Commission**, "to identify and describe the major types of workers' displacement likely to occur in the next ten years, and the social and economic effects of these developments; and to recommend specific proposal for Federal Government action.

श्री. चंद्रकांत किल्लोस्करने जापानके बारेमे कुछ तथ्य दिये है :- (१) जापानमें 'एबारा' नामका पंपोका कारखाना किल्लोस्करजीने देखा। वे कहते है कि, यह कारखाना हरमास २०,००० (बीस हजार) पंप बनाता है, १२५ (अेक सो पचीस) कामगारों के भरोसे। देवासमे हम १०,००० (दस हजार) पंप बनाते है, ७५० मजदूरों के भरोसे। २०,००० पंपों के लिये डेढ़ हजार १५०० मजदूर देवासमें लगेंगे। (२) 'नागोया' से १०० कि. मी. दूरीपर नया कारखाना बन रहा है। इसमे केवल बाईस २२ कर्मचारी रहेंगे। इनमे से तीन वाँचमन रहेंगे। मालीक अपनेही मकानसे (१०० किलोमीटरसे) इसका पूरा नियंत्रण कर सकेंगा। (३) किल्लोस्करजीने 'यामासाकी' नामका कारखाना देखा। यहाँ रातके समय केवल एक वाँचमन रहता है। वह हर घंटेमें देखता है, टॉर्च मारकर, कि सारे यंत्र चल रहे है, या नही। (४) माऊंटफूजी के निकट एक फानुक कंपनीका कारखाना है। इस कारखानेमें एक भी आदमी काम नही करता। सब काम यंत्र करते है। उनको आदेश देनेवाला Computer १०० किलोमीटरपर Tokyo शहरमें है।

इतनी यांत्रिक प्रगति वहाँ हो रही है और इस दृष्टीसे जिस समय United States ने Senate Committee स्थापित की थी तो उसके सामने विचार-वर्तोंने कहा—

**John Snyder**, in his statement, before the U. S. Senate Committee, said in unambiguous terms that

- I. There is **direct displacement** of more than 40,000 a week in U. S. and 1,50,000 every month consequent to automation;
- II. **Indirect Displacement** - Through elimination of jobs, that workers would have been hired for, prior to automation;
- III. Many workers are **not retrainable**-due to intelligence, education, age;
- IV. **Absorption** of some workers in **Maintenance** of automated Machines is a **Myth**.
- V. The **Displaced** are generally unskilled, they will not find jobs elsewhere.  
(According to yet another estimate, computer eliminates 5 jobs and creates one.)

**By Harry Van Arsdale :**

**An early warning system** to signal the approach of automation. The worst sufferers of computerisation in the U. S. will be Negroes, Mexican Americans, American Indians and the Puerto Ricans. Nine-Tenths of the Non-whites are Negroes.



Computers के कारण Monotony बढ़ती है, मानसिक तनाव बढ़ता है Sense of isolation boredom बढ़ता है। damage to eyesight (due to visual Display Units), थकान, पीठदर्द, ये है Low level of radiation के परिणाम।

I. L. O. के (Researcher) डिलमस जेम्स (Dilmus James) कहते हैं:-

“When traditional occupations are utterly swept away by new Technology, there is often a considerable **Social Loss**, that does not enter into the cost calculations of the new enterprise..... The value, knowledge, insights, skills and managerial ability of the people involved, as well as physical facilities are rendered partially or wholly obsolete or redundant.”

श्री. जेम्स नये तांत्रिकीका विवाह पुरानी तांत्रिकीसे करानेका प्रयास कर रहे हैं।

श्री. हरबर्ट मायर, जनरल सेक्रेटरी, इंटर नॅशनल फेडरेशन ऑफ कर्मशियल, क्लेरिकल, प्रोफेशनल अँड टेक्निकल एम्प्लॉयीज कहते हैं :-

“Office and Commercial Sector employees are becoming more and more alienated from their jobs and, with the advent of new technology, even middle managers have less control than before..... Drastic reductions in personnel are taking place in **bank Branches** where **60 to 80 percent** of Bank workers are employed..... The old rule of Thumb that **increased investment necessarily means increased employment**, no longer holds true.” श्री. मायर यह तर्क नहीं मानते कि,

“New jobs are created by using technology, and destroyed by competition, if technology is not used.”

हिंदुस्थानमे बहुत बडी मात्रामें बेरोजगारी है। इसके बारेमे तथा Computers यहाँपर लानेके बारेमें एक विचारवंतने संक्षेपमे यह कहा है—

Disturbance in Law and order situation—main reason for unemployment Employed person is one who works for at least 40 hours a week.

In the six five-year plans employment generation is given only cursory attention.

The adoption of the heavy industry—Mahalnobis economic development model—instead of the labour intensive wage goods model in the fifties.

Capital intensity in the industrial development effort is being encouraged. Capital intensity bias of the Govt; and the Planning Commission which formulates its **5-year plans in terms of money spent (in input-output model) rather than employment generated.**

Over the years 1961-76, investment in the Modern Factory Sector increased by 139%, the value of output by 161%, while employment increased by a mere 71%, indicating a decrease in employment per unit of capital of 28%.

1. Conditions here different from those in the U. S.
2. U. S. is the only country where the jobs in service-producing Industries outnumber the jobs in Goods producing-Industries.
3. Most highly automated industries in U. S. are Chemicals and Oil Refining.
4. The areas most rapidly growing in Service Sector are Health, Care and Education.
5. Tremendous increase in the demand for Scientists, Draftsmen, Engineers, Mathematicians, Technicians, Specialists in Electronics and other Highly Trained people, causing Tremendous Reduction in the demand for unskilled, blue collar workers.
6. The manpower Development and Training Act. of U. S. shows that Literacy is the pre-requisite of occupational Training.
7. Computer Knowledge classes के कारण आनेवाले रोजगार के लिये है मामूली मजदूरों के लिये नहीं ।
8. हिंदुस्थानमें निरक्षता का प्रमाण—४२ करोड पूर्ण निरक्षर, १२ करोड अर्ध निरक्षर.

अक्तूबर १९८२ में मेलबोर्न में 'Asia-Fiat Technology Conference' हुई। उसके कुछ निष्कर्ष निम्न प्रकार हैं—

1. The new technology is being implemented in an unplanned way, which combined with the already serious and deteriorating world economic climate, threatens to destroy far more jobs than it creates.
2. The Technology, and its rate of introduction, must be altered so as to make it compatible with the ability of the regions' economies to create new jobs.
3. The use of technology in developed countries in the region can have serious effects for employment and incomes in the developing countries and vice versa.

4. The new Technologies have profound effect on, not only Employment, but also working Conditions, Job contents, and safety and health of workers. Jobs are made more monotonous and hazardous. Valuable skills are eliminated. The speed and intensity of work and resulting stress are massively increased.
5. Types of Technology must be appropriate to each country's level of development, conducive to employment, growth and compatible with the country's economic and social objectives.
6. Govts. should take direct action to prevent the importation or manufacture of inappropriate technology.
7. The Conference was highly critical of the attitude of the Multi-Nationals in this respect, and fully supported the moves within the United Nations to establish comprehensive codes of conduct on Multi-Nationals and on the Transfer of Technology.
8. Full information to Trade Unions and their participation in Decision-making.

Conference के यह निणय हिन्दुस्थानको भी लागू होते है यह हम जानते है ।

और एक प्रचार हमारे कम्युनिस्ट भाई और दूसरे अनेक कर रहे है । वे कहते है कि, इसमे खतरे है लेकिन इनमेसे रास्ता निकाला जा सकता है । विदेशोमें बैसे **Collective Bargaining** होता है , **Safeguards** निकाले जाते है । लेकिन **Safeguards** निकाले जाते है यह कहना सरासर झूठ है । इंग्लंड, फ्रान्स जैसे देशोमे भी **Safeguards** नही निकाले जाते । इसके कारण वहाँ भी जो एक बार बेरोजगार हो जाते है उनको दूसरे जगह काम देना बहुत कठिन हो जाता है जो बेरोजगार होते है वे कम शिक्षित रहते है, उनको उम्र भी बढ जाती है । वहाँ अक्सर ऐसा दिखाई दे रहा है कि खोये हुए **avenues of employment** और किसी अन्य क्षेत्रमे खोजना असंभव होता जा रहा है । तो भी एक आकर्षक चित्र खडा करनेके लिये वहाँ पर रखी जानेवाली बाते, (**Collective Bargaining**) क्या हिन्दुस्थानमे संभव है, इसका भी विचार होना चाहिये । हमारे देशमे सरमायदार मजदूरविरोधी नीतियाँ अपनाते है । इसमे वे बिलकूल विधिनिषेधशून्य है । सरकारभी ऐसे सरमायदारोंका पृष्ठपोषण विना किसी हिचकिचाहट करती आयी है और करती है । इसके कारण मजदूरोंको केवल पैसे मिलते नही, इतनाही नही, परंतु उनका स्वास्थ्य और जिंदगी खतरेमें आती है । रेयॉनके कारखानोंका उदाहरण देखने लायक है । यह कारखाने जहाँ-जहाँ है वहाँ-वहाँ सरकारकी तरफसे **Viscose Committee** बिठाई गई थी । इस कमिटीका कहना था कि यह धंदा **Safety and health**

के लिये बहुत खतरनाक है। इन खतरोंसे बचनेके लिये कई सुझाव दिये थे। उनमें—हरदिन कामके घण्टे कम हो, पंद्रह सालसे ज्यादा कोईभी मजदूर काम न करे, ज्यादा पेन्शन देनेकी व्यवस्था हो— इसमें से एक भी बात हो नहीं रही लेकिन नागडा जैसे स्थानपर **Viscose Committee** ने कारखानेके लिये बताये हुए **safeguards** अमलमे नहीं लाये गये किन्तु **Township** भी गलत ढंगसे बनाई है और कारखानेका हानिकारक धुआँ सारे **Township** मे चलता है। इसके कारण मजदूरके साथही उसका परिवार भी रोगका शिकार बनता जा रहा है। लेकिन सरकार इसकी दखल लेने तैयार नहीं क्यों कि बिल्जी से चुनावके समय पैसा लेना पडता है। इस परिस्थिती में 1. **Early warning system**, 2. **Reduced working Time (A 25-Hour work week, more holidays, extension of leave etc.)** Increased leisure, 3. **Early Retirement Programmes with Adequate pension**, 4. **A permanent 'Labour-Management Council' on community Resources and Future Employment Levels**, 5. **Retraining facility for Redundant workers and their Employment elsewhere. Maintaining workers' Income until employment found elsewhere at a comparable level of pay**, कोभी कह सकता है कि हिंदुस्थानमें ये होंगा? 6. **Boredom, the amount of Mechanical Repetition and isolation of workers must be avoided**, 7. **Transfer Rights (Including Moving Expenses)**, 8. **Reduction of workforce by Attrition**, 9. **Provision for Training in— Data Processing, Programming, Computer Mathematics. Industrial Electricity & Electronic Theory** and 10. **Search for New Avenues of Employment for Displaced workers**. ऐसी आदर्श व्यवस्था लागू करना कहाँतक सम्भव होगा? और दूसरी बात यह है कि जो ५४ करोड निरक्षर और अर्धनिरक्षर है उनमेंसे कौन इस प्रकारका **training** पाएगा— पानेयोग्य रहेगा? इससे यह स्पष्ट होता है कीं 'वहाँ सबकुछ अच्छा है' 'इसके कारण डरनेकी कोई आवश्यकता नहीं,' 'असके कारण कोई नुकसान नहीं होता' यह प्रचार बिलकुल गलत है।

हम संक्षेपमे इसका थोडा विशाल भी विचार कर सकते है। हमारे यहाँ के **Leftist, science** और **technology** की हरचीज उपकारक है ऐसा मानते है। यह मानना असलिये गलत है कि जैसे पहले बताया, यह **Frankenstein**, भस्मासूर बन सकता है। और हो सकता है कि वह आपकोही नष्ट करे। इसके उदाहरण पाश्चिमात्य देशोंमे हुअे है। **Genetics—** वंशशास्त्र— के शास्त्रज्ञोंने यह **Claim** किया है कि, इ. स. २०४० मे आप वंशशास्त्रज्ञोंके पास **order book** कर सकेंगे— जिससे आप अपने पसंद का आदमी प्राप्त कर सकेंगे, उसका केवल शरीरही नहीं परंतु बुद्ध्यांक ( **I. Q.** ) तथा मनस्थिती भी आप तय कर सकेंगे।

शुरुमें सर्वसाधारणतः इसकी तारीफ हुयी लेकिन विचारवंतोंमें हलचल मची। उनका प्रश्न था कि इससे **Jesus Christ** या महात्मा गांधी अिनके जैसे महामानव हमे मिलेंगे इसकी **guarantee** क्या है? ये मुसोलिनी, हिटलर या स्टालिन निर्माण नहीं करेंगे जिसकी क्या **guarantee** है? तो इ. स. २०४० मे हमें चाहे वैसा आदमी देनेवाले शास्त्रज्ञोंपर नियंत्रण रखना आवश्यक है, वरना ये **Genetics** के शास्त्रज्ञ दुनियाको नष्ट करेंगे। **Automation** और **Computer** के सायन्सका intellectual foundation **Cybernetics** है। **Cibernetics** is the intellectual foundation of computerisation क्यों कि it is the study of human control functions and of mechanical and electric systems designed to replace them. **Cibernetics** के जन्मदाता का नाम है **Dr. Winner**, जिन्होंने ऐसा कहा, कि **Technical know-how** और **Technical know-what** इन दो में फरक करो। **distinguish** करो। **Technical know-how** बताता है **how to achieve the given purposes?** और **Technical Know-what** बताता है **what purposes are to be achieved?** इसलिये उन्होंने कहा कि **Technical know-what** याने **what are the purposes to be achieved** ये पहले तय करना चाहिये, अन्यथा नोबेल और अन्य पुरस्कार हासिल करनेके चक्करमे शास्त्रज्ञ दुनियाका नुकसान करनेयोग्य प्रयोगोंमें सफलता पानेकी चेष्टा करेंगे। १९७७ में इसका अनुभव अमरिकामे आया था। सिअॅटल शहरमें **Genetics** की एक बडी लॅबोरेटरीमें शुरू अन्वेषण के दौरान शास्त्रज्ञ एक ऐसा गॅस निर्माण करना चाहते थे, जिसमें से **Bacteria** की उत्पत्ति होनेवाली थी। लेकिन इस **Bacteria** के गुणधर्मोंका पता उनको नहीं था। उनको अितनाही विश्वास था कि यदि यह प्रयोग यशस्वी होता है तो वंशशास्त्र बडेही तेजीसे आगे बढेगा। सिअॅटल कॉर्पोरेशनके पास प्रयोग करने के लिये माँगी गयी **permisrion** के समय शास्त्रज्ञोंने यह बताया कि यद्यपि इस गॅससे निर्माण होनेवाले **Bacteria** के गुणधर्मोंका पता चला नहीं था, तथापि इस **Bacteria** के वातावरणमे जाने के कारण जो रोग उत्पन्न होने की संभावना थी, अुससे **One-third humanity** नष्ट होनेकी **possibility** निर्माण होना संभव था। यद्यपि एक-तिहाई मनुष्यसंख्या नष्ट होना यह निश्चित नहीं था—वह तो केवल एक संभव व्यक्त किया था—फिरभी कॉर्पोरेशनने विचारविमर्ष के बाद यह **permission** देना नामंजूर किया। इस नामंजूरी का कारण देते हुअे कॉर्पोरेशनने कहा कि **Genetics** की प्रगति न हुयी तो भी चलेगा लेकिन **One-third humanity** को जिसमे **risk** है ऐसा प्रयोग वे नहीं चाहते थे। **Dr. Winner** ने आगे चलकर ये कहा कि अगर **Scientists** और **Techologists** के हाथमे—याने **Technical know-how** के हाथमे—अगर विज्ञान और

तकनीकी प्रगतिके लिये निर्णय सौंपा जाय तो इसमे काफी आपत्ती उठ सकती है । इसलिये सारी **authority technical know-what** के हाथमे होनी चाहिये । अन्होंने सुझाव दिया कि **Scientists** और **Technologists** किस दिशामे प्रगति करे इसका निर्णय करने के लिये, दिशा दिग्दर्शन करने के लिये **Technical Ombudsman** होना चाहिये अन्यथा **Science** और **Technology** की प्रगती मानवता को नुकसान पहुँचानेवाली होगी ।

हम **Science** और **Technology** की प्रगति तो चाहते है, लेकिन **at what cost** ? यह भी विचार करना आवश्यक है । इसलिये हम ये चाहते है कि सभी बातोंका **Integrated thinking** होना अवश्य है । **Science** और **Technology** की प्रगति कितनी हो ? किस दिशामें हो ? इसका सर्वकष और समग्र विचार करनेके लिये **Technical know-what** जाननेवाले, जिसमे सांस्कृतिक मूल्य जाननेवाले और अुनमें विश्वास रखनेवाले लोग—**Technological Ombudsmen**—होने चाहिये.

भारतीय मझदूर संघ **Computerisation** का विरोध कर रहा है इसका मतलब यह नहीं है, कि हम मशिनरीका विरोध करते है, तथा हम **Science** और **Technology** के विरोधमें है । अितनाही है, कि पश्चिमी देशोंका अनुभव और वहाँके विचारवृत्तों का अभिप्राय ख्यालमें रखते हुअे, हमारे देशकी परिस्थिती और आवश्यकताएँ अिनको ध्यानमें रखते हुअे, भारतीय मझदूर संघ सुझाव देना चहाता है कि कहींपर भी इसका **introduction** करने से पहले, अिसे केवल मालिक और मझदूरोंका आपसी मामला न समझते हुए, हमारे देशकी **National Technological Policy** पहले निश्चित की जाय । अिसके लिये एक **Committee for National Technological Policy** गठित की जाय । अिसपर **Technologists** के प्रतिनिधी भले ही रहे, लेकिन जनता, मझदूर, मालिक, **Public Sector Undertakings**, **Educationists**, **Sociologists**, **Psychologists** और अन्यान्य क्षेत्रोंके प्रतिनिधी भी होने चाहिये । अिस **Committee** ने केवल पश्चिम के बहकावेमे न आते हुअे भारतीय संस्कृति, परंपरा और आवश्यकताओंका विचार सामने रखकर सुझाव देने चाहिये । अिस संबंध मे—**National Technological Policy**—गठित होनेवाले ऐसी समितीके अध्यक्षता के रूप में हमारे सामने **Mr. Claud Alvares** जैसे श्रेष्ठ व्यक्तिका नाम है । वे **Technical Ombudsman** बन सकते है ऐसी श्रद्धा होनेके कारण भारतीय मझदूर संघ अुनके नामका सुझाव देता है ।



हमारे अन्य प्रकाशन . . . . .

1] भगवद्गीतेतील आर्थिक विचार

लेखक - प्रभाकरपंत पटवर्धन

2] SPECTRUM

Occasional speeches and writings  
by Shri D. B. Thengadi.

